बदला हुआ बेटा

सेल्मा लेगरलॉफ, हिंदी : विदूषक

एक किसान और उसकी पत्नी का एक छोटा, सुन्दर बेटा है. चुड़ैल का भी एक बेटा है जो बदसूरत है, उसके बाल ब्रश जैसे हैं और दांत, कीलों जैसे नुकीले हैं. एक दिन चुड़ैल किसान के बेटे को पास से देखती है. वो उस सुन्दर बच्चे को देखकर उसपर मुग्ध हो जाती है और जल्दी से दोनों बच्चों की आपस में अदला-बदली करती है.

किसान की पत्नी को अपने बेटे की बहुत याद सताती है. वो पति के भयानक गुस्से और गांववालों की अस्वीकृति को झेलते हुए बड़ी मुश्किल से चुड़ैल के बच्चे की परवरिश करती है. पति अचरज करता है कि उसकी पत्नी उस बदसूरत बच्चे पर अपनी ममता क्यों उंडेल रही है. उस के अपने बेटे का क्या हश्र हुआ? वो उसके बारे में भी सोचता है.

सेल्मा लेगरलॉफ, साहित्य में नोबल पुरुस्कार जीतने वाली दुनिया की पहली महिला हैं. इस कहानी में उन्होंने एक माँ के प्रेम, दयालुपन, त्याग, पुनर्मिलन और दरियादिली को बखूबी पिरोया है. इस कहानी के लोकशैली में सुन्दर चित्र जेअनेट विंटर ने बनाए हैं.

बदला हुआ बेटा

सेल्मा लेगरलॉफ, हिंदी : विदूषक

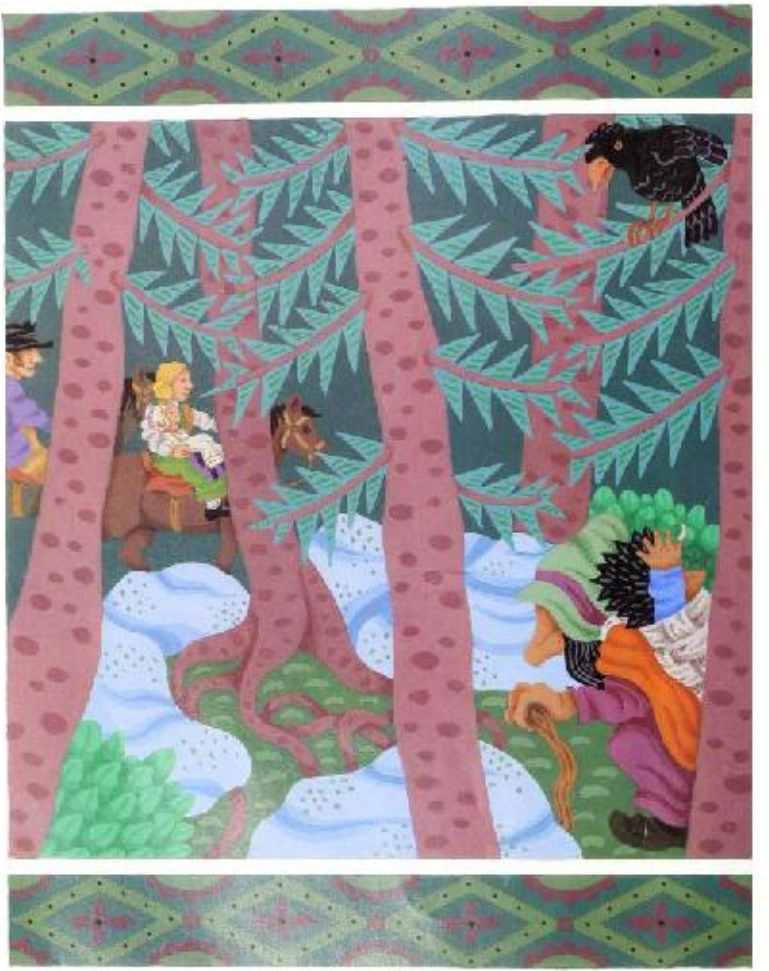

बहुत पुराने ज़माने की बात है. एक चुड़ैल अपने बेटे के साथ जंगल में से गुज़र रही थी. उसका बच्चा उसकी पीठ पर एक लकड़ी की टोकरी में बैठा था. चुड़ैल का बेटा बहुत बड़ा और कुरूप था. उसके बाल ब्रश जैसे थे. उसके दांत कीलों जैसे नुकीले थे. उसकी छोटी उंगली पर एक पंजा था. पर चुड़ैल के लिए उसका बेटा दुनिया का सबसे सुन्दर बच्चा था. कुछ समय बाद चुड़ैल जंगल में एक खुली जगह पर पहुंची. वहां पर कच्ची पगडंडी पर एक किसान अपनी पत्नी और बेटे के साथ घोड़े पर जा रहा था.

जैसे ही चुड़ैल ने उन्हें देखा वो तुरंत जंगल में जाकर छिपी जिससे कि कोई मनुष्य उसे देख न पाए. पर जब उसने किसान की पत्नी की गोद में एक बच्चा देखा तो फिर चुड़ैल ने अपना मन बदला.

“मैं बस यह देखना चाहती हूँ कि क्या कोई बच्चा मेरे बेटे जितना सुन्दर हो सकता है?” चुड़ैल ने सोचा. फिर वो पगडंडी के पास एक ऊंची झाड़ी के पीछे जाकर छिप गई.

जब घोड़ों पर सवार किसान और उसकी पत्नी वहां से गुज़रे तो चुड़ैल अपनी आतुरता में इतनी तेज़ी से आगे बढ़ी कि घोड़े एकदम घबराकर बिदक गए. किसान और उसकी पत्नी चुड़ैल के आतंक को देखकर चिल्लाए. वे घोड़ों से गिर पड़े. डर के मारे उनके घोड़े भाग गए.

चुड़ैल गुस्से में थी, क्योंकि वो किसान के बेटे को सिर्फ एक झलक ही देख पाई थी. वो खुश हुई क्योंकि ज़मीन पर उसके पैरों के पास ही किसान का बेटा पड़ा था. वो डर के मारे चिल्ला रहा था.

घोड़े जब बिदककर अपने पिछले पैरों पर खड़े हुए तो बच्चा अपनी माँ की गोद से गिर गया. वो सूखी पत्तियों के एक ढेर पर जाकर गिरा. उसे कोई चोट नहीं लगी. जब चुड़ैल उसके ऊपर झुकी तो बच्चे ने अचानक रोना बंद कर दिया और वो हंसने लगा. वो चुड़ैल के बालों को अपने हाथों से पकड़ने लगा.

चुड़ैल, इंसान के बच्चे को घूरती रही. उसने बच्चे की पतली उंगलियां और उसके गुलाबी नाखून देखे. चुड़ैल ने उसके मुलायम बालों और गालों को अपने हाथों से छुआ. वो किसान के बच्चे को देखकर बहुत हैरान हुई. उसकी समझ में नहीं आया कि कोई बच्चा भला इतना गुलाबी, मुलायम और नाज़ुक कैसे हो सकता था.

तुरंत चुड़ैल ने अपनी पीठ की टोकरी में से अपने बेटे को बाहर निकाला और इंसान के बच्चे के पास रखा. दोनों के बीच के अंतर को देखकर उसे काफी आश्चर्य हुआ.

उस बीच किसान और उसकी पत्नी ने, अपने घोड़ों को दुबारा काबू में किया. वे फिर अपने बेटे को ढूँढने निकले.

चुड़ैल ने उन्हें आते हुए सुना. पर क्योंकि उसने अभी तक इंसान के बच्चे को अच्छी तरह नहीं निहारा था इसलिए उनके आने तक वो उसे घूरती रही.

फिर चुड़ैल ने झट से एक निर्णय लिया. उसने अपने बेटे को ज़मीन पर ही रहने दिया और इंसान के बच्चे को अपनी टोकरी में रख लिया. फिर टोकरी को पीठ पर लादकर वो तेज़ी से जंगल में घुस गई.

किसान की पत्नी क्योंकि घोड़े पर अपने पति के आगे थी इसलिए उसने बच्चे को पहले देखा. वो बच्चा कौन था? बच्चे की चीख से ही औरत को समझ जाना चाहिए था. पर औरत को डर था कि कहीं गिरने से उसका बच्चा मर न गया हो, इसलिए बच्चे को देखकर उसके मुँह से सिर्फ यही शब्द निकले, "शुक्र है भगवान का, कि वो जिंदा बचा है!"

"देखो यह रहा हमारा बच्चा!" उसने अपने पति को बुलाकर कहा. फिर वो घोड़े की जीन से नीचे उतरी और तेज़ी से चुड़ैल के बच्चे के पास पहुंची.

जब किसान उनके पास पहुंचा तब पत्नी, बच्चे का मुआईना कर रही थी.

“पर मेरे बच्चे के ऐसे दांत और नाखून तो नहीं थे,” उसने कहा और फिर उसने बच्चे को कई बार उलट-पलट कर देखा. “मेरे बेटे के तो ब्रश जैसे बाल नहीं थे,” उसने शिकायत के लहजे में कहा. फिर उसने डरती हुई आवाज़ में कहा, “मेरे बेटे की छोटी ऊँगली में पहले तो कोई पंजा नहीं था!”

किसान को लगा जैसे उसकी पत्नी पागल हो गई थी. वो तुरंत घोड़े से नीचे कूदा.

“ज़रा इस बच्चे को देखो. बताओ कि वो इतना अजीब क्यों लग रहा है?” पत्नी ने अपने पति को बच्चा देते हुए कहा. किसान ने एक निगाह बच्चे को देखा, फिर उसने तीन बार ज़मीन पर थूका और बच्चे को नीचे पटक दिया.

“तुम भला यह क्यों किया?” पत्नी चिल्लाई.

“यह उस चुड़ैल का बच्चा है!” पति ने चिल्लाते हुए कहा. “यह हमारा बच्चा नहीं है.” किसान की पत्नी ज़मीन पर ही बैठी रही. क्या हुआ? यह उसकी समझ में नहीं आया.

"क्या तुम्हें यह नहीं दिख रहा है कि यह बच्चा बदला हुआ है?" पति उस पर चिल्लाया. "जब हमारा घोड़ा यहाँ से गुज़रा उस समय वो चुड़ैल यहाँ बिल्कुल तैयार खड़ी थी. वो हमारा बेटा चुराकर ले गई और अपना छोड़ गई है."

"अब हमारा बेटा कहाँ है?" पत्नी ने पूछा.

"उसे चुड़ैल अपने साथ ले गई होगी."

तब जाकर महिला को अपना दुर्भाग्य समझ में आया. उसका चेहरा एकदम फीका पड़ गया. उसके पति को लगा कि कहीं दुःख से वो वहीं अपने प्राण न त्याग दे.

"हमारा बेटा यहाँ से अभी बहुत दूर नहीं गया होगा," पति ने पत्नी को दिलासा देते हुए कहा. "हम जंगल में जाकर उसे खोजेंगे."

फिर उसने अपने घोड़ों को एक पेड़ से बाँधा. उसके बाद वो जंगल में गया. पत्नी उसके पीछे-पीछे जाना चाहती थी, पर तभी उसने चुड़ैल के बच्चे को देखा. घोड़े उसे लात मारकर ज़ख़्मी कर सकते थे.

"यह देखो वो झुनझुना, जिसे गिरने से पहले हमारा बेटा पकड़े था!" किसान चिल्लाया.

किसान की पत्नी तेज़ी से अपने पति के पीछे गई. फिर दोनों घने जंगल में गए. पर उन्हें वहां न तो अपना बेटा मिला और न ही वो चुड़ैल दिखी. जब अँधेरा छाने लगा तो उन्हें मजबूरन अपने घोड़ों के पास वापिस आना पड़ा.

किसान की पत्नी बहुत दुखी हुई और रोई. उसके पति ने अपने दांत भींचे पर पत्नी से सांत्वना का एक शब्द भी नहीं कहा. बच्चे को गिरने देने के लिए वो अपनी पत्नी से बहुत नाराज़ था. "चाहें कुछ भी होता फिर भी तुम्हें अपने बच्चे को कसकर पकड़े रखना चाहिए था," उसने सोचा. पर पत्नी की दयनीय हालत देखकर उसने चुप रहना ही ठीक समझा.

किसान ने अपनी पत्नी की घोड़े पर चढ़ने में मदद की. तभी पत्नी को उस चुड़ैल के बच्चे की याद आई. "अब हम उस चुड़ैल के बच्चे का क्या करें?" उसने पूछा.

"वो कहाँ है?" पति ने पूछा.

"उस झाड़ी के नीचे."

"उसके लिए वही जगह सही है," पति ने बड़ी कुटिल हंसी के साथ कहा.

"इस घने जंगल में हम उसे अकेले छोड़कर कैसे जा सकते हैं?"

"हम उसे यहीं छोड़कर जायेंगे," किसान ने घोड़े पर बैठते हुए कहा.

किसान की पत्नी को अपने पति की बात ठीक भी लगी. वो भला क्यों उस चुड़ैल के बच्चे की देखभाल करें? उसने अपने घोड़े की लगाम खींची और फिर वो कुछ आगे गई. पर वो कुछ ज्यादा आगे नहीं जा पाई. "वो भी तो एक बच्चा ही है," उसने सोचा. "यहाँ पर भेड़िए उसे खा जाएंगे. मैं उसे यहाँ छोड़कर नहीं जा सकती हूँ."

"वो बच्चा जहाँ है, वहीं ठीक है," पति ने कहा.

"अगर तुम मुझे अभी उसे नहीं ले जाने दोगे, तब मुझे रात में उसे लेने के लिए वापिस आना होगा," किसान की पत्नी ने कहा.

"न केवल उस चुड़ैल ने मेरे बेटे को चुराया है, उसने मेरी बीबी को भी सिरफिरा बना दिया है," किसान ने कहा.

क्योंकि वो अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करता था इसलिए उसने पत्नी को चुड़ैल का बच्चा थमाया.

अगले दिन पूरे गाँव को उनकी बदनसीबी का पता चला. उनमें से जो उमरदराज़ लोग थे उन्होंने अपने-अपने अनुभवों के आधार पर सलाह और नसीहतें दीं.

"जिसके घर में चुड़ैल का बच्चा हो उन्हें उस बच्चे को छड़ी से पीटना चाहिए," एक बूढ़ी औरत ने कहा.

"बच्चे के साथ ऐसा गलत सलूक क्यों?" किसान की पत्नी ने पूछा. "बच्चा चाहें देखने में बदसूरत हो, पर उसने कोई गलती तो नहीं की है."

"अगर पीटने से चुड़ैल के बच्चे का खून बाहर निकलेगा तो फिर चुड़ैल तुम्हारे बच्चे को लेकर दौड़ी हुई आएगी, और अपने बच्चे को वापिस ले जाएगी. मैं कई ऐसी औरतों को जानती हूँ जिन्हें इस तरह अपने बच्चे वापिस मिले हैं."

“पर उनमें से कोई भी बच्चा जिंदा वापिस नहीं आया,” एक दूसरी बूढ़ी महिला ने कहा. किसान की पत्नी को अच्छी तरह पता था कि वो कभी भी एक नादान बच्चे पर अपना हाथ नहीं उठा पायेगी.

जब किसान की पत्नी चुड़ैल के बच्चे के साथ घर में अकेले होती तब उसे अपने बेटे की ज़बरदस्त याद सताती. उसे समझ में नहीं आता, कि वो आखिर क्या करे.

“शायद मुझे लोगों की सलाह को मानना चाहिए था,” उसने सोचा. पर वो उस निरीह बालक पर अपना हाथ नहीं उठा पाई.

तभी किसान घर में घुसा. उसके हाथ में एक छड़ी थी. उसने चुड़ैल के बच्चे के बारे में पूछा. पत्नी समझ गई कि उसका पति अपने बेटे को पाने के लिए उस औरत की सलाह पर चुड़ैल के बच्चे को पीटने आया था. “शायद इसी में कुछ अच्छा हो,” उसने अपने दिमाग में सोचा.

पर जैसे ही पति ने उस बच्चे पर पहला वार किया, उसने अपने पति का हाथ पकड़ लिया. “नहीं! उसे मत मारो! उसे मत पीटो!” उसने अपने पति से भीख मांगी.

“इसका मतलब है कि तुम अपने बेटे को वापिस लाना नहीं चाहती हो,” उसने खुद को पत्नी से छुड़ाते हुए कहा.

किसान ने चुड़ैल के बच्चे को पीटने के लिए दुबारा अपनी छड़ी उठाई. पर पत्नी ने तुरंत अपने शरीर से बच्चे को ढंक दिया. उससे बच्चा तो बच गया, पर किसान की पत्नी को मार पड़ी.

“भगवान बचाए!” किसान ने कहा. “अब मुझे समझ में आया कि तुम क्यों हमारे बेटे को उस चुड़ैल के पास हमेशा के लिए रखना चाहती हो.”

किसान कुछ देर वहां शांत, चुपचाप खड़ा रहा. पर पत्नी वहीं लेटी रही और चुड़ैल के बच्चे की रक्षा करती रही. उसके बाद किसान ने छड़ी फेंक दी और फिर वो गुस्से में अपने पैर पटकता हुआ दुखी मन से घर के बाहर चला गया.

उसके बाद के दिन गमी और उदासी में बीते. किसी माँ के लिए अपने बेटे को खोना वैसे ही बहुत दुखदाई बात थी. पर किसी चुड़ैल के बच्चे से बदला जाना और भी ज्यादा गंभीर मामला था. उससे किसान की पत्नी की अपने बच्चे के प्रति चाहत और बढ़ी. उसे न कोई चैन था, न ही शांति.

"मुझे समझ में नहीं आ रहा है, कि मैं इस बच्चे को क्या खिलाऊँ," किसान की पत्नी ने अपने पति से कहा. "मैं जो भी उसे खाने को देती हूँ, उसमें उसकी कोई रूचि नहीं होती है."

"इसमें आश्चर्य की क्या बात है," उसके पति ने कहा. "चुड़ैल के बच्चे मेंढक और चूहे खाते हैं."

"क्या तुम्हारा मतलब है कि मैं उसके लिए मेंढक और चूहे पकड़कर लाऊँ?" पत्नी ने पूछा.

"बिल्कुल नहीं," उसकी पत्नी ने कहा. "सबसे अच्छा यही होगा कि हम उसे भूखा मरने दें."

पूरा एक हफ्ता बीत गया. किसान की पत्नी चुड़ैल के बच्चे को कुछ भी खिलाने में सफल नहीं हुई.

किसान की पत्नी ने चुड़ैल के बच्चे को कई अच्छी और बढ़िया चीज़ें खाने को दीं, पर उसने हरेक चीज़ थूक दी.

फिर एक रात उनके कमरे में बिल्ली आई. बिल्ली के मुँह में एक जिंदा चूहा था. किसान की पत्नी ने बिल्ली के मुंह से चूहा छीना और उसे बच्चे को खाने को दिया. फिर वो तुरंत कमरे से बाहर चली गई. वो बच्चे को चूहा खाते हुए देखना नहीं चाहती थी.

जब किसान ने अपनी पत्नी को चुड़ैल के बच्चे के लिए मेंढक और मकड़ी इकट्ठे करते हुए देखा तब से उसे पत्नी से बहुत नफरत हो गई. उसके बाद से उसने पत्नी से एक भी अच्छा शब्द नहीं कहा.

बात यहीं तक सीमित नहीं रही. घर के नौकर-चाकर भी अब मालकिन की बातों को अनदेखा करने लगे और उसके साथ बदतमीजी से पेश आने लगे. घर के मालिक के बर्ताव ने शायद इसे और बढ़ावा दिया. किसान की पत्नी को अब बिल्कुल स्पष्ट हो गया कि चुड़ैल के बच्चे का बचाकर रखना उसके लिए एक बहुत कठिन और दर्दनाक काम होगा.

पर सच्चाई यह थी कि उसने चुड़ैल के बच्चे के बचाव के लिए जितना ज्यादा कष्ट झेला वो उसके प्रति उतनी अधिक रक्षात्मक हुई.

एक दिन सुबह किसान की पत्नी, चुड़ैल के बच्चे के फ्रॉक में पैबंद लगा रही थी. उसने सिलते हुए सोचा, "किसी दूसरे के बच्चे की देखभाल करने का काम हमेशा बहुत कठिन होगा."

वो सिलती गई पर फ्रॉक में इतने सारे छेद थे कि उन्हें देखकर उसकी आँखों में आंसू आ गए.

"एक बात मैं जानती हूँ," उसने सोचा. "अगर में अपने बेटे के फ्रॉक की मरम्मत कर रही होती तो मैं कभी उसके छेद नहीं गिनती."

"चुड़ैल का बच्चा मेरे लिए सिर्फ मुश्किलें और तकलीफें ही लाया है," उसने सोचा. "शायद उसे घने जंगल में जाकर छोड़ना ही उचित होगा. फिर वो कभी घर वापिस नहीं आ पायेगा."

"पर शायद मुझे कोई ऐसा बड़ा निर्णय लेने की ज़रुरत ही नहीं पड़े. अगर मैं उसे अपने सामने से कुछ देर के लिए दूर जाने दूं तो फिर वो कुँए में गिर जाएगा, या फिर आग में झुलस जाएगा, उसे कुत्ता उसे काट लेगा या घोड़ा उसे दुलत्ती जमाएगा."

“चुड़ैल के लिए बच्चे से पिंड छुटाना बहुत मुश्किल नहीं था. और अब वो हर रोज़ ज्यादा शैतानी करने लगा था. फार्म पर सभी लोग उससे नफरत करते थे. अगर कुछ समय वो मेरी निगरानी में नहीं होगा तो कोई-न-कोई मौका मिलते ही, उससे पिंड छुड़ा देगा.”

फिर किसान की पत्नी चुड़ैल के बच्चे को देखने गई. वो घर के एक कोने में सोया था. वो अब पहले के मुकाबले ज्यादा कुरूप लग रहा था. उसका मुँह अब एक नथुनी में बदल रहा था, भौएं दो सख्त बालों वाले ब्रश जैसी थीं, और उसकी त्वचा, चमड़े जैसी सख्त थी.

“मुझे लगता है कि मुझे तुम्हारे कपड़े मरम्मत करते रहना चाहिए और तुम्हारी देखभाल भी करनी चाहिए,” उसने अपने मन में सोचा. “कम-से-कम मैं इतना तो तुम्हारे लिए कर ही सकती हूँ. पर मेरा पति मुझसे नफरत करता है, फार्म के लोग भी मुझसे घृणा करते हैं, घर की नौकरानियां मुझ पर हंसती हैं, यहाँ तक की बिल्ली भी मुझे देखकर फुफकारती है, कुत्ता भूंकता है – और यह सब तुम्हारे कारण.

"मैं लोगों की नफरत को बर्दाश्त कर सकती हूँ," उसने जोर से कहा. "पर सबसे दुःख की बात यह है, कि तुम्हें देखते ही मुझे अपने बेटे की बेहद याद आती है. मेरे लाडले बेटे, तुम इस समय कहाँ हो? क्या तुम काई और तिनकों पर उस शैतान चुड़ैल के साथ लेटे हो?"

तभी दरवाज़ा खुला. किसान की पत्नी तुरंत अपनी सिलाई पर वापिस लौटी. उसका पति अन्दर आया. आज वो काफी खुश दिख रहा था. बहुत दिनों बाद उसने अपनी पत्नी से प्यार से कुछ कहा था.

"आज गाँव से कुछ दूर एक बाज़ार लगा है. तुम क्या मेरे साथ वहां चलोगी?"

इस प्रस्ताव से किसान की पत्नी खुश हुई. वो अपने पति के साथ बाज़ार जाने को तैयार हो गई.

"पर," तभी उसके दिमाग में एक बात कौंधी. "क्या उसका पति उसे इसलिए घर से बाहर लेकर जाना चाहता था, जिससे उसकी गैरमौजूदगी में फार्म के लोग चुड़ैल के बच्चे को ठिकाने लगा दें?" फिर वो जल्दी से घर के अन्दर गई और चुड़ैल के बच्चे को अपने साथ लेकर आई.

"क्या तुम उसे घर पर छोड़कर नहीं चल सकतीं?" उसके पति ने पूछा.

गुस्सा होने की बजाए वो शांत रही. "नहीं उसे घर में अकेले छोड़कर जाने की मेरी हिम्मत नहीं है," उसने उत्तर दिया.

"खैर, जैसे तुम्हारी मर्ज़ी," किसान ने कहा, "फिर पहाड़ी पर तुम्हें काफी भार लेकर चढ़ना पड़ेगा."

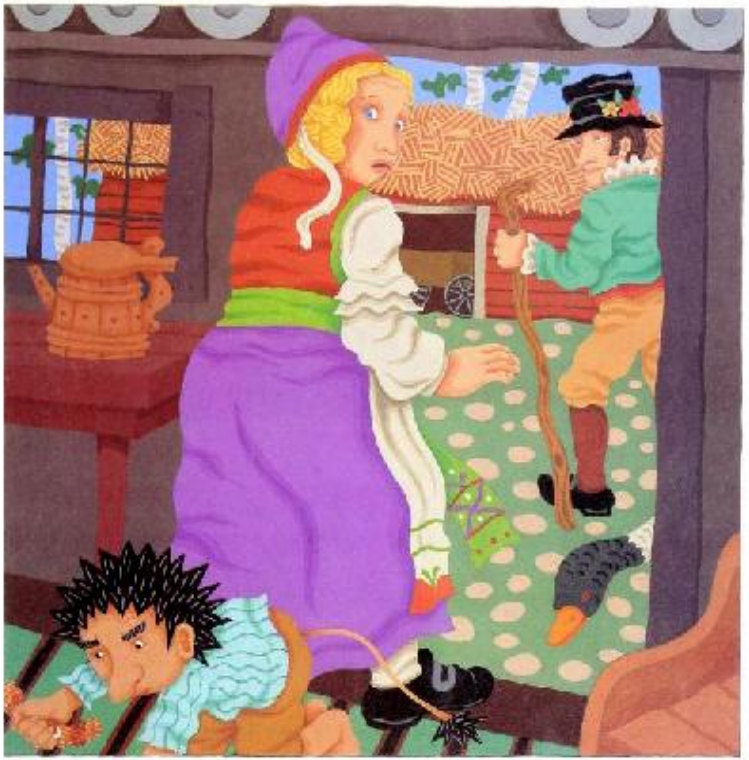

फिर पति-पत्नी ने अपनी यात्रा शुरू की. कुछ देर बाद पत्नी के लिए उस बच्चे को चढ़ाई पर उठाना बहुत मुश्किल हो गया. किसान की पत्नी उस भारी बच्चे को उठाते-उठाते इतना थक गई कि उससे आगे एक कदम भी नहीं रखा गया. उसने बच्चे को कई बार अपने पैरों पर चलने के लिए उकसाया पर वो उसके लिए बिल्कुल राज़ी नहीं हुआ.

पर आज उसका पति काफी खुश था. बेटा खोने के बाद आज पहला दिन था जब वो इतने उत्साह में था. "मुझे चुड़ैल का बच्चा दे दो," उसने कहा, "अब कुछ देर मैं उसे लेकर चलूँगा."

"मैं तुम्हें परेशान करना नहीं चाहती हूँ," किसान की पत्नी ने कहा. "मैं नहीं चाहती कि वो बच्चा तुम्हें परेशान करे."

"तुम अकेले आखिर कब तक उसका बोझ उठाओगी?" उसने बड़े प्रेम से कहा और फिर बच्चे को अपने कंधे पर ले लिया.

जहाँ पर किसान ने चुड़ैल के बच्चे को लिया था वो रास्ता सबसे कठिन था. पहाड़ी की इस सकरी पगडंडी के एक ओर एक गहरी घाटी थी. उस दुर्गम पगडंडी पर बहुत हल्के-हल्के, एक-एक कदम रखकर ही आगे बढ़ा जा सकता था. अचानक किसान की पत्नी को डर लगा. चुड़ैल के बच्चे को ढोते हुए कहीं उसके पति को कुछ हो न जाए?

"यहाँ बहुत हल्के और संभल कर चलो!" वो चिल्लाई, क्योंकि उसे लगा कि वो बहुत तेज़ और लापरवाही से चल रहा था. कुछ देर बाद ही उसका पति ठोकर खाकर गिरा और बच्चा घाटी में गिरते-गिरते बचा.

"अगर चुड़ैल का बच्चा घाटी में गिर जाता तो फिर सदा के लिए हमारा उससे पिंड छूट जाता," उसने सोचा. पर उसी क्षण उसे समझ में आया कि उसका पति वाकई में उस बच्चे को खाई में फेंकना चाहता था. बाद में वो उसे एक दुर्घटना बताता.

“तो यह थी उसकी असली मंशा!” पत्नी ने सोचा. “उसने यह सब नाटक इसलिए रचा था जिससे वो दुर्घटना का बहाना बनाकर चुड़ैल के बच्चे से अपना पिंड छुड़ा सके. वो जो करना चाहता था मुझे उसको वो करने देना चाहिए था. शायद उसी में कुछ अच्छाई होती.”

एक बार उसका पति दुबारा एक ढीले पत्थर पर गिरा तब चुड़ैल का बच्चा उसके हाथ से फिसलते-फिसलते बचा. “बच्चे को मुझे दे दो! तुम गिरने वाले हो,” पत्नी ने कहा.

“नहीं, फ़िक्र मत करो,” पति ने कहा, “मैं संभाल कर पकड़ूँगा.”

जब किसान ने तीसरी बार ठोकर खाई तब उसने सहारे के लिए एक पेड़ की टहनी पकड़ी, पर बच्चा उसके हाथ से फिसल गया.

तभी पत्नी ने एक तेज़ छलांग लगाई और गिरते चुड़ैल के बच्चे के कपड़ों को पकड़ लिया. फिर उसने लटकते बच्चे को ऊपर खींचा.

कुछ देर बाद पत्नी ने अपने पति को देखा. पति का चेहरा विकृत होकर बिल्कुल बदल गया था. “जब तुमने अपने बच्चे को जंगल में गिराया तब तुमने इतनी तेज़ी क्यों नहीं दिखाई?” उसने बड़े गुस्से में कहा.

पत्नी ने अपने पति के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया. उसे बहुत गहरी चोट लगी और उसे समझ में आया कि उसके पति की दयालुता बिल्कुल झूठी थी. फिर वो रोने लगी.

“तुम रो क्यों रही हो?” उसने गुस्से में पूछा. अगर वो चुड़ैल का बेटा नीचे घाटी में गिर जाता तो कौन सी बड़ी आफत आ जाती. चलो, ज़रा जल्दी करो. हमें देर हो रही है.”

“मेरा अब बाज़ार जाने का कोई दिल नहीं है,” पत्नी ने कहा.

“ठीक है. अब मेरा भी बाज़ार जाने का मन नहीं है,” पति ने कहा.

घर की ओर जाते वक्त किसान ने खुद से पूछा, कि वो इस तरह से कितने दिन जिंदा रह पायेगा. उसे लगा कि अगर वो अपनी ताकत से चुड़ैल के बच्चे को खींचकर फेंक दे तो फिर वो और उसकी पत्नी, हमेशा के लिए ख़ुशी से रह पाएंगे. पर बच्चे को खींचने से पहले जब उसने अपनी पत्नी की ओर देखा, तो वो उसे ताक रही थी, घूर रही थी – जैसे वो उसकी भावनायें समझ गई हो. पति ने एक बार फिर खुद के गुस्से को काबू में किया और फिर से हालात सामान्य हो गए.

गर्मियों में एक रात उनके खलिहान में आग लग गई. अलाव के पास सो रहे नौकरों की जब तक आँख खुली तब तक सभी कमरों में धुआं भर चुका था और ऊपर की मंजिल धू-धू करके जल रही थी. आग को बुझाना और सामान को सुरक्षित बाहर ले जाना एकदम असंभव था. बस इतना समय था कि लोग जलने से बचने के लिए सिर्फ बाहर भाग सकते थे.

किसान ने अपने जलते घर को देखा.

"मैं सिर्फ एक बात जानना चाहता हूँ," उसने पूछा, "भला मेरे ऊपर ही यह शामत क्यों आई?"

"यह शामत उस चुड़ैल के बच्चे के अलावा भला और कौन ला सकता है?" खेत पर काम करने वाले एक मजदूर ने कहा.

"वो चुड़ैल का बच्चा कब से लकड़ियाँ और टहनियां इकट्ठी कर रहा था और उन्हें घर के अन्दर और बाहर जला रहा था."

“कल वो छत पर लकड़ियों का एक गट्ठर लेकर गया था,” एक नौकरानी ने कहा, “वो आग जलाने वाला ही थी, पर मैंने उसे रोका.”

“काश वो अन्दर जलकर भस्म हो जाए,” किसान ने कहा, “तब मुझे अपने पुराने घर के जलने का इतना दुःख नहीं होगा.”

जैसे ही किसान ने यह शब्द कहे उसकी पत्नी घर के अन्दर से चुड़ैल के बच्चे को गोद में उठाए तेज़ी से बाहर निकली. पर किसान ने झट से बच्चे को अपने हाथ में खींचा और उसे फिर से जलते हुए घर में फेंक दिया.

किसान की पत्नी ने एक क्षण के लिए अपने पति को घूरा. फिर वो तेज़ी से जलते घर में बच्चे को बचाने के लिए घुसी.

“तुम भी उसके साथ ही जलकर भस्म हो जाओ,” उसका पति पीछे से चिल्लाया.

पर वो वापिस आई और उसके साथ चुड़ैल का बच्चा भी था. उसकी हथेलियाँ जलने से सूज गई थीं और उसके बालों से अभी भी चिंगारियां निकल रही थीं. जब वो कुएं पर अपने जलते कपड़ों को बुझाने के लिए गयी तब किसी ने उससे कुछ नहीं कहा और न ही उसकी कोई मदद की. उसके बाद वो कुएं की दीवार के सहारे ही टेक लगाकर बैठ गई. चुड़ैल का बच्चा कुछ देर बाद उसकी गोद में ही लेटा-लेटा सो गया. किसान की पत्नी अपनी आँखें फाड़े, दुखी मन से उस नज़ारे को देखती रही. जलते हुए घर तक जाने वाले बहुत से लोग उसके पास से गुज़रे पर उनमें से किसी ने उससे एक शब्द नहीं कहा.

सुबह तक घर जलकर ख़ाक हो गया था. तब किसान अपनी पत्नी के पास आया. "मुझसे अब और सहा नहीं जाता," उसने कहा. "तुम्हें छोड़कर जाना मेरे लिए आसान नहीं है पर मैं अब उस चुड़ैल के बच्चे के साथ नहीं रह सकता हूँ. अब मैं अपने रास्ते जा रहा हूँ और अब मैं कभी वापिस नहीं आऊँगा."

पत्नी ने अपने पति के यह शब्द सुने और फिर उसे जाते हुए देखा. वो उसके पीछे जाना चाहती थी पर वो कैसे जाती? चुड़ैल का भारी बच्चा उसकी गोद में जो लेटा था. उसमें अब उठने का दम तक नहीं बचा था. इसलिए वो जहाँ थी, वहीं बैठी रही.

उस किसान ने पहाड़ियों की तरफ अपने कदम बढ़ाये. शायद वो इस रास्ते पर दुबारा कभी वापिस नहीं आए.

वो अभी थोड़ी ही दूर गया था जब एक छोटा लड़का उसकी ओर दौड़ा हुआ आया. वो लड़का गोरा और सुन्दर था और एक नए पेड़ की तरह पतला था. उसके बाल मुलायम रेशम जैसे थे और उसकी आँखों में चमक थी.

"अगर उस चुड़ैल ने मेरा बेटा चुराया नहीं होता, तो मेरा लड़का भी इस लड़के जैसा ही दिखता!" किसान ने कहा.

"गुड मोर्निंग!" किसान ने लड़के से कहा, "तुम कहाँ जा रहे हो?"

"आपको भी गुड मोर्निंग!" लड़के ने कहा. "आप अंदाज़ लगायें कि मैं कौन हूँ? फिर मैं कहाँ जा रहा हूँ, वो भी आपको पता चल जायेगा."

उस लड़के की आवाज़ सुनकर किसान का चेहरा एकदम फीका पड़ गया.

"तुम तो मेरे लोगों के लहजे में ही बातें कर रहे हो," उसने कहा. "और अगर मेरे बेटा उस चुड़ैल के साथ नहीं होता, तो मैं तुम्हें अपना बेटा ही समझता."

"आपने बिलकुल सही अनुमान लगाया, पिताजी," लड़के ने हँसते हुए कहा. "और क्योंकि आपने सही अंदाज़ लगाया इसलिए मैं आपको बता दूं कि मैं अपनी माँ से मिलने जा रहा हूँ."

"नहीं! तुम अपनी माँ से मिलने मत जाओ," किसान ने कहा. "माँ को तुम्हारी और मेरी कोई फ़िक्र नहीं है. तुम्हारी माँ का दिल तो सिर्फ उस चुड़ैल के बच्चे में ही अटका है."

"क्या यह सच है, पिताजी?" लड़के ने अपने पिता की आँखों में घूरकर पूछा. "तब मुझे आपके साथ ही रहना चाहिए."

किसान अपने बेटे को वापिस पाकर बेहद खुश हुआ. ख़ुशी से उसकी आँखों में आंसू उमड़ आए. "हाँ बेटा! अब तुम सिर्फ मेरे साथ ही रहना!" उसने कहा. फिर उसके लड़के को अपनी गोद में लिया और हवा में ऊपर उठाया. उसे डर था कि लड़का कहीं दुबारा गुम न हो जाए, इसलिए वो उसे अपने कंधे पर उठाकर आगे चला.

उसने कुछ ही कदम रखे थे कि लड़के ने दुबारा बातचीत शुरू की.

"आप मेरे साथ उसी क्रूरता से तो नहीं पेश आएंगे जो आपने चुड़ैल के बच्चे के साथ दिखाई थी?" उसने पूछा.

"तुम्हारा क्या मतलब?" किसान ने पूछा.

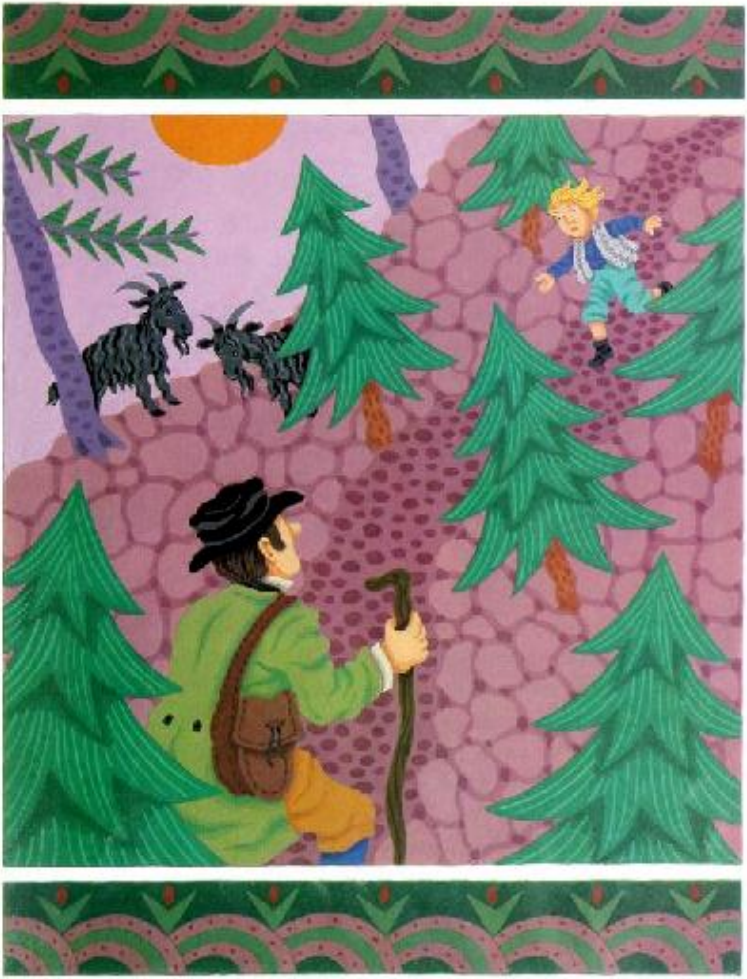

"कुछ दिन पहले चुड़ैल मेरे साथ पहाड़ी पर चल रही थी. और जब-जब आपने चुड़ैल के बच्चे को घाटी में गिराने की कोशिश तब-तब उसने मुझे भी गिराया."

"तुमने क्या कहा? तुम चुड़ैल के साथ घाटी के उस पार चल रहे थे," किसान ने उत्सुकतावश पूछा.

"मैं जीवन में कभी इतना नहीं डरा," लड़के ने कहा. "जब आपने चुड़ैल के बच्चे को घाटी में फेंका तो चुड़ैल ने भी मेरे साथ वही किया. बस, माँ की वजह से ही मैं बचा...."

फिर किसान ने अपनी चाल धीमी की और उसने लड़के की बात को गहराई से समझने की कोशिश की. "मुझे बताओ, उस चुड़ैल ने तुम्हारे साथ कैसा सलूक किया?"

"मैंने कई तकलीफें झेलीं," छोटे लड़के ने कहा, "पर जब-जब माँ ने चुड़ैल के बच्चे के साथ अच्छा व्यवहार किया, तब-तब चुड़ैल भी मेरे साथ अच्छी तरह पेश आई."

"क्या चुड़ैल ने कभी तुम्हें मारा?" किसान ने पूछा.

"उसने मुझे उतनी ही बार मारा जितनी बार आपने चुड़ैल के बच्चे को पीटा."

"क्या उसने तुम्हें अच्छा खाना खिलाया?" पिता ने पूछा.

"जब चुड़ैल के बच्चे को डबलरोटी-मक्खन दिया गया तो चुड़ैल ने मुझे, सांप और मेंढक खाने को दिए. शुरू में मैं भूख से बेचैन होकर लगभग मरने की कगार पर था. पर जब माँ ने चुड़ैल के बच्चे को मेंढक और चूहे दिए फिर मुझे खाने को डबलरोटी-मक्खन मिला. माँ की वजह से ही मैं जिंदा...."

लड़के की बातें सुनने के बाद किसान ने अपने गाँव की ओर चलना शुरू किया. "बेटा, तुम्हारे शरीर से धुएं की बदबू क्यों आ रही है?" किसान ने लड़के से पूछा.

"उसमें कोई गूढ़ रहस्य नहीं है," लड़के ने कहा. कल रात "मुझे आग में झोंका गया था. माँ की वजह से ही मैं बचा ...."

किसान अब इतनी जल्दबाजी में था कि वो अब चलने की बजाए दौड़ रहा था. फिर अचानक वो रुका. “अच्छा यह बताओ, चुड़ैल ने तुम्हें कब और क्यों रिहा किया?” उसने लड़के से पूछा.

“जब माँ ने अपनी ज़िन्दगी से भी कीमती चीज़ बलिदान की तब फिर चुड़ैल एकदम विवश हो गई. फिर उसका जादू मुझ पर चलना बंद हो गया और उसने मुझे जाने दिया,” लड़के ने कहा.

“वो बहुमूल्य चीज़ क्या थी, जिसका तुम्हारी माँ ने त्याग किया?” किसान ने पूछा.

“माँ ने चुड़ैल के बच्चे को बचाने के लिए, आपको सदा के लिए जाने दिया, यह उनका सबसे बड़ा त्याग था,” लड़के ने कहा.

किसान की पत्नी बिलकुल दुखी और हताश अभी भी कुएं के पास ही बैठी थी. उसे लगा जैसे वो पत्थर बन गई हो. तभी उसे अपने पति की आवाज़ सुनाई दी. वो दूर से उसका नाम पुकार रहा था. अपना नाम सुनकर उसका दिल जोरों से धड़कने लगा. फिर उसने आँखें खोलीं और वो चारों ओर देखने लगी. वो एक शानदार दिन था. सूरज पूरी तरह खिला था और चिड़िए चहचहा रही थीं. पर जब उसने घर की जले खम्बे और चारों ओर मलबा पड़ा देखा, लोगों के काले चेहरे और सूजे हुए हाथ देखे, तब उसे लगा की उसकी ज़िन्दगी अब बद-से-बदतर हो गई थी. उसे यह भी एहसास हुआ कि शायद यह दुःख उसका अंतिम दुःख था. उसने चारों ओर चुड़ैल के बच्चे को ढूँढा, पर वो दूर-दूर तक दिखाई नहीं दिया.

एक बार फिर से उसे अपने पति की आवाज़ सुनाई दी. वो जंगल की छोटी पगडंडी पर चलता हुआ फार्म की तरफ आ रहा था. जिन नौकरों ने आग बुझाने में मदद की थी वे सभी उसकी ओर दौड़े और उन्होंने उसे घेर लिया. इसलिए वो अपने पति को ठीक से देख नहीं पाई. उसे बस अपने पति की आवाज़ सुनाई दी. वो बार-बार अपनी पत्नी का नाम ले रहा था.

पति की आवाज़ में गज़ब की ख़ुशी थी, पर वो वहां खुद एकदम शांत और चुपचाप बैठी रही. अंत में नौकरों के बीच में से पति निकला और अपनी पत्नी के पास आया. उसने पत्नी की गोद में उस सुन्दर बच्चे को रखा.

“यह हमारा बेटा है. वो हमारे पास लौट आया है,” पति ने कहा, “वो बस तुम ही थीं, जिसने उसकी ज़िन्दगी बचाई.”